कक्षा-10

वर्णिका

भाग-2

पूरक हिन्दी पाठ्यपुस्तक

INDIAN ARMY

Arms you FOR LIFE AND CAREER AS AN OFFICER
Visit us at www.joinindianarmy.nic.in
or call us (011) 26173215, 26175473, 26172861

Ser NO	Course	Vacancies Per Course	Age	Qualification	Appln to be received by	Training Academy	Duration of Training
1.	NDA	300	16½ - 19 Yrs	10+2 for Army 10+2 (PCM) for AF, Navy	10 Nov & 10 Apr (by UPSC)	NDA Pune	3 Yrs + 1 yr at IMA
2.	10+2 (TES) Tech Entry Scheme	85	16½ - 19½ Yrs	10+2 (PCM) (aggregate 70% and above)	30 Jun & 31 Oct	IMA Dehradun	5 Yrs
3.	IMA(DE)	250	19 - 24 Yrs	Graduation	May & Oct (by UPSC)	IMA Dehradun	1½ Yrs
4.	SSC (NT) (Men)	175	19 - 25 Yrs	Graduation	May & Oct (by UPSC)	OTA Chennai	49 Weeks
5.	SSC (NT) (Women) (including Non- tech Specialists and JAG entry)	As notified	19 - 25 Yrs for Graduates 21-27 Yrs for Post Graduate/ Specialists/ JAG	Graduation/ Post Graduation /Degree with Diploma/ BA LLB	Feb/Mar & Jul/ Aug (by UPSC)	OTA Chennai	49 Weeks
6.	NCC (SPL) (Men)	50	19 - 25 Yrs	Graduate 50% marks & NCC 'C' Certificate (min B Grade)	Oct/ Nov & Apr/ May	OTA Chennai	49 Weeks
	NCC (SPL) (Women)	As notified					
7.	JAG (Men)	As notified	21 - 27 Yrs	Graduate with LLB/ LLM with 55% marks	Apr / May	OTA Chennai	49 Weeks
8.	UES	60	19-25 Yrs (FY)18-24 Yrs (PFY)	BE/B Tech	31 Jul	IMA Dehradun	One Year
9.	TGC (Engineers)	As notified	20-27 Yrs	BE/ B Tech	Apr/ May & Oct/ Nov	IMA Dehradun	One Year
10.	TGC (AEC)	As notified	23-27 Yrs	MA/ M Sc. in 1st or 2nd Div	Apr/ May & Oct/ Nov	IMA Dehradun	One Year
11.	SSC (T) (Men)	50	20-27 Yrs	Engg Degree	Apr/ May & Oct/ Nov	OTA Chennai	49 Weeks
12.	SSC (T) (Women)	As notified	20-27 Yrs	Engg Degree	Feb/ Mar & Jul/ Aug	OTA Chennai	49 Weeks

वर्णिका

(भाग-2)

दसवीं कक्षा की पूरक हिंदी पाठ्यपुस्तक

ABSOL
PATNA

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

निदेशक (माध्यमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त ।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

प्रथम संस्करण : 2010-11
पुनर्मुद्रण : 2012-13
पुनर्मुद्रण : 2013-14
पुनर्मुद्रण : 2014-15

मूल्य : रु० 8.50

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्धमार्ग, पटना-800001 द्वारा प्रकाशित तथा बब्लु बाईडिंग हाउस, पटना कोल्ड स्टोर, शाहगंज, पटना-6 द्वारा 1.25 लाख प्रतियाँ मुद्रित।

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल-2009 से प्रथम चरण में राज्य के कक्षा IX हेतु नए पाठ्यक्रम लागू किया गया है। इस क्रम में सत्र-2010 के लिए I, III, VI एवं X की सभी भाषायी एवं गैर-भाषायी पुस्तकों का पाठ्यक्रम लागू किया गया है। इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली द्वारा विकसित वर्ग X की गणित एवं विज्ञान तथा एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार पटना द्वारा विकसित I, III, VI तथा X की सभी पुस्तकें एवं शैक्षिक सत्र-2011 में वर्ग II, IV, VII तथा शैक्षिक सत्र-2012 में वर्ग V एवं VIII की सभी पुस्तकें बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम द्वारा आवरण चित्रण कर मुद्रित की गई हैं।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, **श्री नीतीश कुमार,** शिक्षा मंत्री श्री पी० के० शाही तथा शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव, **श्री अमरजीत सिन्हा** के मार्ग दर्शन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली तथा एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार, पटना के निदेशक के हम आभारी है, जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया।

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों के टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा-जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके।

जे०के०पी० सिंह, भा०रे०का०से०

प्रबन्ध निदेशक

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०

संरक्षण

श्री हसन वारिस, निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार ।
श्री रघुवंश कुमार, निदेशक (शैक्षणिक), बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक प्रभाग), पटना
डॉ० कासिम खुर्शीद, अध्यक्ष, भाषा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार ।

पाठ्यपुस्तक विकास समिति

प्रो० भृगुनंदन त्रिपाठी, हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।
डॉ० हेमंत कुमार हिमांशु, सहायक संपादक, ज्ञान विज्ञान, पटना ।
डॉ० मधुमंजरी, व्याख्याता, जे० डी० महिला कॉलेज, पटना।
डॉ० निलिमा सिंह, व्याख्याता, बी० डी० कॉलेज, पटना।
डॉ० भारती कुमारी सिंह, शिक्षिका, नवोदय विद्यालय, किशनगंज।
श्री हारून रशीद, पूर्व प्राचार्य, ऑरियण्टल कॉलेज, पटना।
श्री अनील पतंग, हाई स्कूल शिक्षक, वाथा गुमती, बेगुसराय।

समन्वयक :

डॉ० सुरेन्द्र कुमार, व्याख्याता, एस० सी० ई० आर० टी०, पटना।
श्री इम्तियाज आलम, व्याख्याता, एस० सी० ई० आर० टी०, पटना।

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक) की समीक्षा समिति के सदस्य

डॉ० सुरेन्द्र स्निग्ध, प्रोफेसर, हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।
डॉ० गीता द्विवेदी, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मगध महिला कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।

अकादमिक, संयोजक, पाठ्यक्रम एवं पाठ्य-पुस्तक विकास समिति

डॉ० ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, तपिन्दु इंस्टीच्यूट ऑफ हायर स्टडीज, पटना ।

आमुख

यह पुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2006 के आलोक में निर्मित नवीन पाठ्यक्रम (2007) के आधार पर तैयार की गई है । इस पुस्तक के निर्माण में इस बात का ध्यान रखा गया है कि "शिक्षा का मतलब बिहार के स्कूली शिक्षार्थियों को इतना सक्षम बना देना है कि वे अपने जीवन का सही-सही अर्थ समझ सकें, अपनी समस्त योग्यताओं का समुचित विकास कर सकें, अपने जीवन का मकसद तय कर सकें और उसे प्राप्त करने हेतु यथासंभव सार्थक एवं प्रभावी प्रयास कर सकें, और साथ-ही-साथ इस बात को भी समझ सकें कि समाज के दूसरे व्यक्ति को भी ऐसा ही करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है ।" राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2006 हमें बताती हैं कि शिक्षार्थी के स्कूली जीवन और स्कूल से बाहर के जीवन में अंतराल नहीं होना चाहिए । किताब और किताब से बाहर की दुनिया आपस में गुँथी होनी चाहिए । आशा है कि यह कदम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफी दूर तक जाएगा ।

इस पुस्तक में बच्चों की कल्पनाशक्ति के विकास, उनकी गतिविधियों की सृजनशीलता, उनके सवाल करने और उनका उत्तर पाने के मौलिक अधिकार के समुचित संरक्षण और उसे रचनात्मक दिशा देने की कोशिश की गई है । निश्चय ही इसमें छात्रों के साथ-साथ शिक्षकों की भी गहरे लगाव के साथ उतनी ही भूमिका होनी चाहिए । छात्रों के प्रति संवेदना और सहानुभूति के साथ उन्हें पुस्तक में गहरी सक्रिय सहभागिता बरतनी होगी और लेखक परिचय, मूल पाठ और उसके साथ संलग्न अभ्यास प्रश्नों के संदर्भ में समुचित जागरूकता दिखानी होगी । हर पाठ के साथ अनेक तरह के अभ्यास हैं जिनसे छात्रों की पाठ पर पकड़ तो बनेगी ही, साथ ही उनके भीतर व्यापक जिज्ञासा को प्रोत्साहन मिलेगा ।

पुस्तक की परिकल्पना में अनेक महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखा गया है । भाषा और साहित्य के ढर्रे में बँधे घेरों को सकारात्मक स्तर पर तोड़ने और वृहत्तर अनुभव क्षेत्रों को उनसे जोड़ने के साथ-साथ वैविध्यपूर्ण पाठ शृंखला को उबाऊ होने से बचाते हुए ऐसा प्रयत्न किया गया है कि पाठ बोझिल न हों तथा सामयिक जीवन संदर्भों से जुड़ कर छात्र के लिए रोचक बन जाएँ । छात्र उत्सुकता और आनंद के साथ तनावमुक्त रीति से उन्हें पढ़ते हुए बहुविध जानकारी प्राप्त करें और उस जानकारी का ज्ञान के सृजन में उपयोग कर सकें ।

एस० सी० ई० आर० टी० सर्वप्रथम इस पुस्तक में शामिल रचनाकारों, उनके प्रकाशकों एवं परिवारजनों के प्रति विशेष आभार प्रकट करती है, भाषा विभागाध्यक्ष डॉ० कासिम खुरशीद, व्याख्याता इम्तियाज आलम एवं डॉ० सुरेन्द्र कुमार और साथ ही इस पुस्तक के निर्माण के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करती है । प्रो० भृगुनंदन त्रिपाठी, डॉ० हेमंत कुमार हिमांशु के प्रति हम विशेष आभार प्रकट करते हैं । इन्होंने गहरी सूझबूझ, अथक परिश्रम और भावात्मक लगाव के साथ इस कार्य को तत्परतापूर्वक संपन्न किया । पुस्तक की कंपोजिंग, पेज मेकिंग और टाइप सेटिंग के लिए एरिश कंप्यूटर के मो० जाहिद हुसैन और अखिलेश कुमार बधाई के पात्र हैं ।

पुस्तक आपके हाथों में है । इसे पढ़ने-पढ़ाने के प्रसंग में हुए अनुभवों से उपजे परामर्शों एवं सुझावों की हमें हमेशा प्रतीक्षा रहेगी ।

निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण
परिषद्, बिहार

प्रस्तुत पुस्तक

'वर्णिका' बिहार के वर्ग दस के छात्रों के लिए हिन्दी की सहायक पुस्तक है जो द्रुतपाठ के लिए तैयार की गई है । इस पुस्तक में हिन्दी की प्रतिवेशी भारतीय भाषाओं की समकालीन कहानियाँ संकलित हैं । पुस्तक का नाम ही इसकी संकल्पना को बखूबी स्पष्ट कर देता है । हिन्दी भाषा-साहित्य का और विशेषकर हिन्दी जनता का गृहीत भाषा-भाषियों से एक नैसिर्गक अपनापा है । भारतीय जनता की अंतर्व्याप्त गहन एकता की ही अभिव्यक्ति सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में भी अनुभूत और अभिव्यक्त होती है । यही एकता अपनापा का तात्त्विक आधार है । एक ही तार, अपनी विविधताओं के बावूजद, समस्त भारतीय जनता और उसके साहित्य को झंकृत करता है । ये कहानियाँ इस सत्य की एक संक्षिप्त झाँकी पेश करती हैं ।

अपनापा की यह एक बानगी भर है । विशेष वय और वर्ग के छात्रों के लिए सहायक पाठ्यपुस्तक बनाते हुए स्पष्ट ही हमारी सीमा थी । भारतीय भाषाओं और उनके साहित्य का, भारतीय कथा साहित्य का, विपुल विस्तार है और यहाँ 'कहानी' जैसे छोटे साहित्य-रूप में भी इस बहुविस्तार का प्रतिनिधत्व संभव नहीं था । इतनी सारी भाषाएँ और उनका दैशिक-कालिक वर्धमान विस्तार – इस वैविध्यपूर्ण विस्तार को नमूने के तौर पर भी, समेट पाना या प्रतिनिधित्व दे पाना, हमारी इस पुस्तक की सीमित परिमा में, संभव नहीं था । स्वभावतः ऐसा मोह या आग्रह न रखते हुए हमने सिर्फ पाँच भाषाओं की सुलभ कहानियों के माध्यम से अपनापे की झलक देने की कोशिश की है । तमिल, कन्नड़, ओड़िया, गुजराती और राजस्थानी – सिर्फ इन्हीं पाँच भाषाओं से ये कहानियाँ संकलित हैं । राजस्थानी हिन्दी की ही उपभाषा है । वह हिन्दी की प्राचीन साहित्यिक अभिव्यक्तियों में से एक है । स्वभावतः उसके माध्यम से यहाँ हिन्दी का 'आपा' भी इस वर्णिका में शामिल है ।

कहानियाँ सिर्फ एक 'थीम' को लेकर संकलित की गई हैं । यह 'थीम' है – 'माँ' । सभी कहानियों के केंद्र में – मर्मस्थल में माँ की उपस्थिति है । माँ के ये विविध रूप और छवियाँ हैं, अपने स्वभाव और चरित्र के भाव वैभव और वात्सल्य के साथ । माँ इस पुस्तक के भीतर है, कहानियों में; तथा माँ हमारे जीवन में, घर-परिवार में, हमारी अपनी कहानी में भी है । वह निरंतर भीतर-बाहर से हमें सींचती-सँवारती है । हमारी शक्ति और सामर्थ्य में उसी की अभिव्यक्ति है । इस सत्य को हमारी अनुभूति का विषय बनाती हैं ये कहानियाँ, और इस तरह कहीं हमारी निजी अनुभूति को भी स्वर देती हैं ।

आशा है, स्त्री की महनीय मूर्ति माँ की विविध पार्श्वछवियों को संवेदना, विचार और समझ के धरातल पर यहाँ पेश करती ये कहानियाँ पाठकों को विशेष रुचिकर प्रतीत होंगी ।

भाषा शिक्षा विभाग
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण
परिषद् बिहार

अनुक्रमणी

1.	दही वाली मंगम्मा (कन्नड़)	श्रीनिवास	01
2.	ढहते विश्वास (उड़िया)	सातकोड़ी होता	11
3.	माँ (गुजराती)	ईश्वर पेटलीकर	20
4.	नगर (तमिल)	सुजाता	30
5.	धरती कब तक घूमेगी (राजस्थानी)	साँवर दइया	38